

मध्य प्रदेश में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाएं

Poonam Pandey (Research Scholar),

Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh

Dr. Joteshna (Supervisor)

Kalinga University, Raipur, Chhattisgarh

सारांश:

पुस्तकालयों का इतिहास दर्शाता है कि साहित्य संस्कृति के सहज विकास के परिणामस्वरूप संस्था का विकास हुआ। इतिहासकारों के अनुसार, नेवादा और तक्षशिता के विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय अच्छी तरह से सुसज्जित, बड़े करीने से रखे गए और कुशलता से प्रबंधित थे। वे रालोनिधि और रत्नागर के नाम से जाने जाते थे; गहनों का 'महासागर' और रत्नों का 'भंडार' का उल्लेख नालंदा के निर्माण के कई मंजिला पुस्तकालय के भारत के इतिहास के काम में किया गया है, जो इसकी दुर्लभता और महत्व को प्रमाणित करता है। ये पुस्तकालय सामान्य रूप से एक सार्वजनिक पुस्तकालय और विशेष रूप से एक विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए टोन सेट करते हैं, और एक चमकदार उदाहरण के रूप में कार्य करते हैं। ये पुस्तकालय उस समय भारत में लोगों के सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक जीवन के केंद्र में थे।

खोजशब्द: पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली

परिचय:

सार्वजनिक पुस्तकालयों को दुर्लभ सार्वजनिक धन प्राप्त होता है और उन्हें यह प्रदर्शित करना चाहिए कि कैसे करदाताओं के धन का उपयोग व्यक्तिगत नागरिकों और उन समुदायों के लाभ के लिए किया जाता है जिनमें वे काम करते हैं। वर्तमान राजनीतिक और आर्थिक माहौल सार्वजनिक पुस्तकालयों के मूल्य के दस्तावेजीकरण पर जोर देता है। इसके अलावा, सार्वजनिक पुस्तकालयों को सामाजिक परिवर्तनों, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के विकास और डिजिटलीकरण, बहुसंस्कृतिवाद के उदय और स्थानीय समुदायों

के विखंडन, और कम से कम, चल रहे आर्थिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर मौलिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र पर दबाव सार्वजनिक पुस्तकालय प्रभाव की व्यापकता सार्वजनिक पुस्तकालयों की मूलभूत विशेषता को प्रदर्शित करती है: उनकी जटिलता। स्कूलों या अस्पतालों जैसे अन्य सार्वजनिक संस्थानों के विपरीत, जो शैक्षिक और स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करते हैं, सार्वजनिक पुस्तकालय, ज्यादातर छोटे संस्थान होने के बावजूद, जीवन के बहुत अलग क्षेत्रों - बच्चों और वयस्कों, स्थानीय व्यवसायों, पर निर्देशित सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं। विकलांग या बुजुर्ग लोग, और किंडरगार्टन से लेकर विश्वविद्यालयों तक का पूरा शैक्षिक क्षेत्र। वे मनोरंजन, व्यक्तिगत खेती और व्यक्तिगत और नागरिक कौशल के विकास के लिए कई तरह की सेवाएं भी प्रदान करते हैं। इसके अलावा, सार्वजनिक पुस्तकालयों का एक भौतिक स्थान, एक सांस्कृतिक और सामाजिक सभा स्थान, एक सार्वजनिक कक्ष और अध्ययन और चिंतन के लिए एक स्थान के रूप में प्रभाव और मूल्य होता है।

मध्य प्रदेश

1 नवंबर, 1956 को भोपाल को अपनी राजधानी के साथ मध्य प्रदेश एक राज्य बना। यह 48 जिलों में विभाजित है और 308,346 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। स्वयंसेवी संगठनों द्वारा लंबे समय तक बनाए गए पुस्तकालयों के अलावा, मध्य प्रदेश सरकार क्षेत्रीय और जिला पुस्तकालयों का रखरखाव करती है और ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालयों की सहायता करती है। बहुत पहले ही इस राज्य के लोगों ने पुस्तकालय कानून के महत्व को पहचान लिया था। तत्कालीन मध्य प्रांत के लिए डॉ. रंगनाथन का मसौदा पुस्तकालय विधेयक 1946 में तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री एस.वी. गोखले को प्रस्तुत किया गया था। हालांकि, इसके परिणामस्वरूप कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। सत्रहवां अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन 1968 में इंदौर में आयोजित किया गया था।

सार्वजनिक पुस्तकालय का मिशन

सार्वजनिक पुस्तकालय का मिशन नीचे दर्शाया गया है:

- छोटे बच्चों और नए साहित्यकारों में पढ़ने की आदतों का विकास करना और उन्हें मजबूत करना।
- औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में सहायता करना।

-
- MADHYA PRADESH DISTRICTS**
- State Boundary
District Boundary
State Capital
District HQ
- Projection - Lambert Tangent
Copyright © BurningCompass.Com. All Rights Reserved

नक्शा 1: मध्य प्रदेश के जिले

इस सम्मेलन में पुस्तकालय विधेयक पर चर्चा हुई और यह निर्णय लिया गया कि मध्य प्रदेश पुस्तकालय संघ पुस्तकालय कानून के मुद्दे को उठाएगा। परिणामस्वरूप, डॉ. जी.डी. भार्गव और श्री वी.एस. मोघे ने एक पुस्तकालय बिल का मसौदा तैयार किया और एसोसिएशन के माध्यम से शिक्षा मंत्री श्री जगदीशनारायण अवस्थी को प्रस्तुत किया। विधेयक को विभिन्न विभागों के माध्यम से पारित किया गया था लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। संघ द्वारा विधानसभा में इस मुद्दे को उठाया जा रहा है।

उद्देश्य:

सार्वजनिक पुस्तकालय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और अन्य मामलों पर विभिन्न सार्वजनिक समूहों के ज्ञान के आधार पर सूचना प्रसार सेवाओं की पेशकश करने वाली सामाजिक संस्थाएँ हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होंगे:

- सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास का पता लगाना;
- सार्वजनिक पुस्तकालय का अर्थ समझा सकेंगे;
- सामान्य रूप से सार्वजनिक पुस्तकालय कार्यों का वर्णन करें, और विशेष रूप से वर्तमान भारतीय समाज के संदर्भ में।

साहित्य की समीक्षा

लमानी, तलावर और कुंभार धारवाड़ में जिला केंद्रीय पुस्तकालय की वर्तमान स्थिति की जांच करते हैं, साथ ही समुदाय की जानकारी की जरूरतों को पूरा करके सामुदायिक विकास में योगदान देने में सामुदायिक सूचना केंद्र के रूप में इस सार्वजनिक पुस्तकालय की भूमिका की जांच करते हैं। उन्होंने पाया कि जिला केंद्रीय पुस्तकालय, धारवाड़, अपने आसपास के समुदाय के सदस्यों को सामुदायिक सूचना सेवा प्रदान करने में विफल रहा क्योंकि इस केंद्र के संसाधन विभिन्न सामुदायिक समूहों की जरूरतों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त हैं (लमानी, तलावर और कुम्बर, 2014)।

Adewusi के अध्ययन ने चार नाइजीरियाई समुदायों में सामुदायिक विकास पर सामुदायिक सूचना केंद्रों के प्रभाव की जांच की, मुख्य रूप से शिक्षकों, व्यापारियों, किसानों, मछली विक्रेताओं, सिविल सेवकों, छात्रों और अन्य लोगों को उत्तरदाताओं के रूप में वितरित प्रश्नावली पर आधारित एक सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति को नियोजित किया। अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, समुदायों में सामुदायिक सूचना सेवाएं दुर्लभ हैं, और

समुदाय अपने जीवन को सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी, शैक्षिक रूप से सशक्त बनाने, बदलने और बदलने के लिए अच्छी तरह से भंडारित सामुदायिक सूचना केंद्रों की स्थापना के लिए तरस रहे हैं। और राजनीतिक रूप से बेहतरी के लिए (Adewusi, 2013)।

अध्ययन का मुख्य लक्ष्य इलम शहर, ईरान में ग्रामीण सामाजिक-सांस्कृतिक विकास पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव को निर्धारित करना था। यह अध्ययन एक व्यावहारिक शोध अध्ययन के रूप में आयोजित किया गया था, और यह प्रकृति में मात्रात्मक था। इस अध्ययन में प्रश्नावली प्राथमिक डेटा संग्रह साधन था। (2013) (अरयेश, शरीफी, और पोर्साइड)।

इस्लाम और अहमद का शोध उत्तरी बांग्लादेश में अपने समुदायों के लिए ग्रामीण पुस्तकालयों के सूचना प्रावधान पर केंद्रित है। निष्कर्षों के अनुसार, ग्रामीण पुस्तकालय बड़े पैमाने पर स्थानीय समुदाय की सूचनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और स्थानीय निवासियों (इस्लाम और अहमद, 2012) के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कृष्णमूर्ति और अन्य लोगों के शोध से समाज के बदलते संदर्भ में ग्रामीण जनता के विकास में ग्रामीण पुस्तकालयों के महत्व के साथ-साथ ग्रामीण पुस्तकालयों की उनके दैनिक जीवन के लिए आवश्यक जानकारी के प्रसार में एक सामुदायिक सूचना केंद्र के रूप में भूमिका का पता चलता है। यह कर्नाटक के ग्रामीण इलाकों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से सरकार के विशेष कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डालता है। यह सुझाव देता है कि ग्रामीण पुस्तकालय सामुदायिक सूचना केंद्र (सीआईसी) के रूप में कार्य करते हैं और विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों (कृष्णमूर्ति, 2012) के उचित उपयोग के लिए उपयुक्त आवश्यकता-आधारित जानकारी प्रदान करके ग्रामीण समुदाय के बीच जागरूकता बढ़ाने में सक्रिय हैं।

अपने शोध में, उमर और उनके सहयोगियों ने मलसिया ग्रामीण पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का उपयोग करने में संभावित कारकों, लाभों और चुनौतियों की पहचान की। ग्रामीण पुस्तकालय सेवाओं का उपयोग करते समय ग्रामीण समुदाय द्वारा सामना की जाने वाली संभावित समस्याओं को संबोधित किया जाना चाहिए ताकि ग्रामीण समुदाय प्रदान की जाने वाली सेवाओं से लाभान्वित हो सके (उमर, बोलॉन्ग, और डी'सिल्वा, 2012)।

(नवोकोचा, 2004) के अनुसार, एक सार्वजनिक पुस्तकालय वह है जो उस समुदाय या शहर की आम जनता की सेवा के लिए स्थापित किया जाता है जिसमें वह स्थित है। अन्य

पुस्तकालयों की तुलना में, इसमें सबसे विविध ग्राहक हैं क्योंकि इसका उपयोग कौन कर सकता है इस पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

एक पुस्तकालय, (रॉबर्सन, 2005) के अनुसार, एक संस्था है जो उन बौद्धिक उत्पादों का प्रबंधन करती है जिन तक व्यक्तियों की पहुंच है।

अनुसंधान क्रियाविधि

भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली भौगोलिक रूप से विविध है, गांवों से महानगरीय शहरों तक। इस प्रणाली की विशेषताएं पुस्तकालय की श्रेणी, स्थान, राजनीतिक परिदृश्य और कई अन्य बाहरी कारकों के आधार पर भिन्न होती हैं। सूचना एकत्र करने के माध्यम से इस विषय प्रणाली का प्रतिनिधित्व करने के लिए कंटार ने सार्वजनिक पुस्तकालय पुस्तकालयाध्यक्षों, सार्वजनिक और अन्य पुस्तकालयों (शैक्षणिक, सांस्कृतिक/मिशन/दूतावास, और निजी ऋण देने वाले पुस्तकालयों) के उपयोगकर्ताओं और पुस्तकालयों के गैर-उपयोगकर्ताओं सहित कई हितधारकों से संपर्क किया। उपयोग की गई अनुसंधान पद्धति, लक्षित उत्तरदाताओं को मिले, पुस्तकालयों का दौरा किया, और डेटा संग्रह अवधि सभी का विवरण नीचे दिया गया है।

इस अध्ययन के लिए डेटा साक्षात्कार, राजा राममोहन राय पुस्तकालय फाउंडेशन की वेबसाइट, राष्ट्रीय पुस्तकालय वार्षिक रिपोर्ट, सरकारी आधिकारिक रिकॉर्ड, आधिकारिक वेबसाइट, साहित्यिक लेखन, मौखिक इतिहास, पाठ्यपुस्तकों, और व्यक्तिगत डायरी और समाचार पत्रों से लेखों के माध्यम से एकत्र किया गया था।

परिणाम और चर्चा

RRRLF पुस्तकालय विभाग या सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं के प्रभारी विभाग के सहयोग से विभिन्न सहायता योजनाओं के माध्यम से सार्वजनिक पुस्तकालयों को किताबें और वित्तीय सहायता प्रदान करके सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं को बढ़ावा देता है। सहायता योजनाएँ दो प्रकार की होती हैं: मैचिंग और नॉन-मैचिंग।

सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम

भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची में राज्य सूची के आइटम 12 में 'सार्वजनिक पुस्तकालयों' का उल्लेख किया गया है। क्योंकि यह एक राज्य का विषय है, 30 राज्यों और छह केंद्र शासित प्रदेशों में से केवल 18 ने सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम (2009 तक)

बनाए हैं। हालाँकि, केवल दस राज्यों ने भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास और विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है (तालिका 2)। कर्नाटक राज्य ने भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

तालिका 1: भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम

क्र.सं.	राज्य	वर्ष	अधिनियम का विवरण
1	कर्नाटक	1948	5 paise per rupee on property tax
2	गुजरात	1960	8 paise per rupee on property tax
3	महाराष्ट्र	1965	5 paise on land revenue and state govt grants
4	आंध्र प्रदेश	1967	No Library Cess
5	तमिल नाडु	1979	No Library Cess
6	केरल	1988	No Library Cess
7	पंजाब	1989	Surcharge on property tax
8	हरियाणा	1989	Surcharge on property tax
9	उत्तर प्रदेश	1993	No Library Cess
10	झारखण्ड	1993	Surcharge on IMFL @ 0.50 ps/ltr.
11	बिहार	2001	No Library Cess
12	राजस्थान	2001	No Library Cess

13	□□□□□□□□	2005	No Library Cess
14	□□□□□□□□	2006	No Library Cess
15	□□□□□ □□□□□□	2006	No Library Cess
16	□□□□□□□□ (UT)	2007	No Library Cess
17	□□□□□	2008	No Library Cess
18	□□□□□□□□	2009	No Library Cess
19	□□□□□□□ □□□□□□	2009	No Library Cess

स्रोत: RRRLF वेबसाइट, <http://rrrlf.nic.in/> से प्राप्त

तालिका 1 के अनुसार, भारत में केवल 18 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश ने पुस्तकालय कानून पारित किया है। ऐसा करने वाला तमिलनाडु पहला राज्य है, इसके बाद आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और अन्य राज्य हैं। केवल छह राज्यों में पुस्तकालय कानून है जो पुस्तकालय उपकरण के संग्रह की अनुमति देता है, अर्थात् तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, हरियाणा और गोवा। शेष राज्यों में पुस्तकालय समाप्ति का कोई प्रावधान नहीं है, इसलिए उन्हें राज्य सरकार के अनुदान पर निर्भर रहना पड़ता है। यह भारत की सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के समग्र विकास में प्रमुख बाधाओं में से एक है।

निष्कर्ष

सार्वजनिक पुस्तकालयों का नैतिक दायित्व है कि वे सभी को ऐसी जानकारी प्रदान करें जिसका उपयोग आत्म-सशक्तिकरण, आर्थिक, शैक्षिक और राष्ट्रीय विकास के लिए किया जा सके। यह भी उम्मीद की जाती है कि सार्वजनिक पुस्तकालय आवश्यक सामग्री और सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में समुदाय के सदस्यों की सहायता करेंगे।

संदर्भ

1. लमानी, एम.बी.; तलवार, ए.बी. और कुंभार, बी.डी. (2014)। सामुदायिक सूचना केंद्र के रूप में सार्वजनिक पुस्तकालय का कार्याकल्प: जिला केंद्रीय पुस्तकालय, धारवाड़

- का एक केस स्टडी। सूचना प्रसार और प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 4(2), 97-101।
2. मार्टिन विलियम जे (1995)। वैश्विक सूचना समाज, दूसरा संस्करण; एस्लिब ग्रोअर; इंग्लैंड, पी. 233.
 3. मोस्टर्ट, बी.जे. और वर्म्यूलेन, डब्ल्यू.एम. (1998)। सामुदायिक पुस्तकालय: पिनेटाउन पब्लिक पुस्तकालय द्वारा अवधारणा और इसका अनुप्रयोग। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के दक्षिण अफ्रीकी जर्नल, 66(1), 10-22।
 4. पुस्तकालयों पर राष्ट्रीय मिशन। भारत में पुस्तकालय परिदृश्य। <http://www.nmlindia.nic.in/pages/display/24> पर उपलब्ध है। (10 अगस्त 2017 को एक्सेस किया गया)।
 5. नवोकोचा, यू. (1993)। नाइजीरिया में वयस्कों द्वारा संसाधनों का उपयोग- दो सार्वजनिक पुस्तकालयों का केस स्टडी। अंतर्राष्ट्रीय सूचना और पुस्तकालय समीक्षा, 25(1), 88।
 6. सुमी, एस। (2012)। जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश के सामुदायिक पुस्तकालयों में सामुदायिक सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सूचना अवसंरचनात्मक सुविधाएं। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ पुस्तकालय साइंस एंड रिसर्च, 2(1), p18-27।
 7. त्रेहान, जी.एल. (1980)। एक विकासशील समाज के लिए पुस्तकालय सेवाएं। इला बुलेटिन, XVI (1-2), (जनवरी-जून 1980)।
 8. उहेगबू, ए.एन. (2001)। सामुदायिक विकास के लिए सूचना सेवा के लिए अवरोधक। पुस्तकालय रिव्यू, 50(5), 237-242।
 9. "स्टेट पुस्तकालय" स्टेट सेंट्रल पुस्तकालय कोहिमा, © 2020, <http://statelibrary.nagaculture.in/Home/Index>
 10. "द स्टेट सेंट्रल पुस्तकालय" मेघालय सरकार: कला और संस्कृति विभाग, 6 जून 2019. <http://megartsculture.gov.in/libraris.htm>